हक बैठे दिल अर्स में, कह्या हकें अर्स दिल मोमिन।
रूहें पोहोंचाई हकें अर्स में, हक बैठे अर्स दिल रूहन।। ६७ ।।

श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल को अर्श करके बैठे हैं। श्री राजजी महाराज ने मोमिन के दिल को अर्श कहा है। मोमिनों के दिल में बैठकर रूह (मोमिनों) को परमधाम में पहुंचाते हैं।

हक रूहें बीच अर्स के, नहीं जुदागी एक खिन।
हुकमें नैन कान दीजिए, अब देखो नैनों सुनो वचन।। ६८ ।।

श्री राजजी महाराज और रूहों के बीच परमधाम में एक क्षण की भी जुदाई नहीं है। अब हुकम के द्वारा ही श्री राजजी को अपने निज नैनों से देखो और आत्मा के कानों से उनकी बातों को सुनो।

अब हकें हुकम चलाइया, खुदी फरेबी गई गल।
रास खेल रस जागनी, हुआ रूहों सुख असल।। ६९ ।।

अब श्री राजजी महाराज के हुकम से मेरी फरेबी (अहंकार) समाप्त हो गई है। इसलिए, हे मेरी आत्मा! तू श्री राजजी महाराज के साथ जागनी रास खेलकर उनके इश्क का रस ले। यही रूह का असल सुख है।

कहे हुकमें महामत मोमिनों, हकें पोहोंचाई इन मजल।
कहे सास्त्र नहीं त्रैलोक में, सो हक बैठे रूहों बीच दिल।। ७० ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से मोमिनों को कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने ही मुझे इस दर्जे तक पहुंचाया है। वेद और शास्त्र कहते हैं कि पारब्रह्म चौदह लोकों में नहीं है। वह पारब्रह्म श्री राजजी महाराज रूहों के दिल में साक्षात् बैठे हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २०१ ॥

आतम फरामोसी से जागे का प्रकरण

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी के हुकम से मेरे दिल में ऐसा लगता है कि इश्क से आत्मा जागृत हो जाएगी, क्योंकि इश्क आने से श्री राजजी महाराज का स्वरूप दिल में आ जाएगा और रूह जाग जाएगी।

हक सूरत वस्तर भूखन, बीच बका अर्स के।
तिनको निरने इन जुबां, क्यों कर केहेवे ए।। २ ।।

अखण्ड परमधाम के बीच विराजमान श्री राजजी के स्वरूप का वर्णन यहां की जबान से कैसे करें?

जिन दृढ़ करी हक सूरत, हक हुकमें जोस ले।
अर्स चीज कही सो मेहेर से, पर बल इन अंग अकल के।। ३ ।।

जिन्होंने श्री राजजी के हुकम और जोश को लेकर श्री राजजी महाराज और परमधाम का कुछ वर्णन किया, तो यह सब श्री राजजी की मेहर से ही हुआ है, परन्तु संसार की अकल की शक्ति से कहा।

Nijanand App

जो वचन जुबां केहेत है, हिस्सा कोटमा ना पोहोंचत।
पोहोंचे ना जिमी जरे को, तो क्या करे जात सिफत।।४।।

यहां की जबान से परमधाम के एक कण का करोड़वां हिस्सा भी वर्णन नहीं हो सकता, तो फिर हकजात मोमिनों की सिफत का वर्णन कैसे करें?

किया हुकमें बरनन अर्स का, पर दृष्ट मसाला इत का।
एक हरफ लुगा पोहोंचे नहीं, लग अर्स चीज बका।।५।।

श्री राजजी के हुकम से ही परमधाम का वर्णन किया है, पर समझाने के वास्ते चीजें यहां की ली हैं। परमधाम की चीजें जो अखण्ड हैं, उनका वर्णन करने के लिए यहां एक भी शब्द नहीं है।

जिन देखी सूरत हक की, इन वजूद के सनमंध।
जोस हुकम मेहेर देखावहीं, मोमिन जानें एह सनंध।।६।।

जिन्होंने इन तनों के सम्बन्ध से श्री राजजी महाराज के जोश, हुकम और मेहर को लेकर श्री राजजी महाराज का स्वरूप देखा है, वही परमधाम के मोमिन हैं।

सबों सिफत करी जोस अकलें, इन अंग छूटे ना दृष्ट फना।
कोई बल करो हक हुकमें, पर असैं क्यों पोहोंचे सुपना।।७।।

जिसने भी आज दिन तक धनी के जोश से अपनी अकल से वर्णन किया है, उनकी दृष्टि संसार तक ही रही। श्री राजजी महाराज के हुकम से कोई अपना बल भी करे तो भी अखण्ड परमधाम का वर्णन सपने के अन्दर बैठकर नहीं होता।

नींद उड़े रहे न सुपना, और सुपने में देखना हक।
मेहेर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक।।८।।

जागृत होने पर नींद समाप्त हो जाएगी तो स्वप्न कैसे रहेगा? सपने में ही श्री राजजी महाराज को देखना है और वर्णन करना है। जब श्री राजजी की मेहर, इलम और जोश आ जाए तो उनके हुकम से संसार में बैठे ही देख सकते हैं।

पर जेता हिस्सा नींद का, रूह तेती फरामोस।
जो मेहेर कर हुकम देखावहीं, तब देखे बिना जोस।।९।।

आत्मा में जितनी फरामोशी रहेगी उतनी बेसुधी रहेगी। जब श्री राजजी महाराज की मेहर और हुकम उनके स्वरूप के दर्शन कराएगी तो फिर बिना जोश के ही दर्शन होंगे।

हक जानें सो करें, अनहोनी सो भी होए।
हिसाब किए सुपन में, मुतलक न देखे कोए।।१०।।

श्री राजजी महाराज जो चाहें कर सकते हैं। अनहोनी को भी सम्भव कर सकते हैं। श्री राजजी ने स्वप्न में बैठाकर परमधाम का वर्णन कराया, जिसे आज दिन तक कोई अपनी बल और बुद्धि से नहीं कर सका।

ए बात तो कारज कारन, हक जानत त्यों करत।
असल रूह तन मिलावा, निसबत है वाहेदत।।११।।

यह बात तो कार्य-कारण से बनी है। जैसा चाहते हैं वैसा करते हैं। रूहों के असल तन मूल-मिलावा में हैं जो एकदिल हैं। मूल-मिलावा में बैठे हैं। वह श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

ए हक बातन की बारीकियां, सो हक के दिए आवत।
ना सीखे सिखाए ना सोहोबतें, हक मेहेरें पावत।। १२ ।।

यह श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बातें हैं, जो उनके देने से ही समझ में आएंगी। श्री राजजी महाराज की वाणी सीखने से, सिखाने से या संगति से नहीं मिलती। धनी की मेहर से मिलती है।

अपनी रूहों वास्ते, कई कोट काम किए।
ए जानें अरवाहें अर्स की, जिन नाम निसान लिए।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी रूहों के वास्ते करोड़ों काम किए हैं, जिनको परमधाम की रूहें जानती हैं, क्योंकि परमधाम के निशानों को यही समझती हैं।

ए जो अर्स बारीकियां, अर्स सहूरें रूह जानत।
जिन पट खुल्या सो न जानहीं, बिना हक सिफत।। १४ ।।

यह परमधाम की गुझ बातें हैं जो परमधाम की रूहें जागृत बुद्धि से जानती हैं। जिनको परमधाम की सुध भी हो गई है वह श्री देवचन्द्रजी (श्यामा महारानी) भी श्री राजजी महाराज की मेहर के बिना श्री राजजी के दिल की खास बातों को नहीं जान सके।

जिन जो देख्या जागते, सो देखे माहें सुपन।
कानों सुन्या सोभी देखत, याके साथ तो हक इजन।। १५ ।।

जिन्होंने परमधाम को जागृत अवस्था में देखा है, वही अब सपने में बैठकर देख रहे हैं। जो ज्ञान श्री देवचन्द्रजी महाराज से सुना उसको भी अब मैं स्वप्न में बैठकर देख रही हूं, क्योंकि मेरे साथ श्री राजजी महाराज का हुकम है।

रखे वजूद को हुकम, जेते दिन रख्या चाहे।
रूहों खेल देखावने, कई विध जुगत बनाए।। १६ ।।

जागृत होने पर भी श्री राजजी महाराज का हुकम मोमिनों को जितने दिन चाहे संसार में रोके रखता है। इस तरह से रूहों को खेल दिखाने के वास्ते श्री राजजी महाराज ने कई तरह से प्रबन्ध कर रखे हैं।

आतम तो फरामोस में, भई आड़ी नींद हुकम।
सो फेर खड़ी तब होवहीं, रूह दिल याद आवे खसम।। १७ ।।

हमारी आत्माएं तो फरामोशी में हैं, क्योंकि धनी के हुकम से हम स्वप्न के तन में आ गए हैं। जब दिल में श्री राजजी महाराज की याद आएगी तो फरामोशी हट जाएगी और रूहें जागृत हो जाएंगी।

सो साख मोमिन एही देवहीं, यो बूझ में भी आवत।
अनुभव भी कछू केहेत है, और हुकम भी कहावत।। १८ ।।

इस बात की गवाही मोमिन देते हैं। यह बात समझ में भी आती है। अनुभव से भी कुछ वर्णन करती हूं। कुछ वर्णन हुकम कराता है।

मोमिन केहेवें हुकमें, बूझ अनुभव पर हुकम।
हुकम केहेवे सो भी हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम।। १९ ।।

मोमिन जो कुछ कहते हैं हुकम से ही कहते हैं। उनकी समझ और अनुभव भी हुकम के अधीन है। हुकम जो कहला रहा है वह भी धनी के हुकम के अधीन है।

Nijanand App

रूह तेती जागी जानियो, जेता दिलमें चुभे हक अंग।
जो अंग हिरदे न आइया, रूह के तेती फरामोसी संग।। २० ।।

रूह के दिल में श्री राजजी महाराज का जितना स्वरूप याद आता है उतना ही रूह जागी समझो। श्री राजजी महाराज के जिस अंग का अनुभव नहीं होता है समझ लो अभी उतनी फरामोशी है।

ताथें जो रूह अर्स अजीम की, सों क्यों ना करे उपाए।
ले हक सरूप हिरदे मिने, और देवे सब उड़ाए।। २१ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वह श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देखने के उपाय क्यों नहीं करतीं? वह श्री राजजी के स्वरूप को हृदय में लेकर संसार को छोड़ देती हैं।

इस्क बिना रूह के दिल, चुभे ना सूरत हक।
मेहेर जोस निसबतें, हक हुकमें चुभे मुतलक।। २२ ।।

इश्क के बिना रूह के दिल में श्री राजजी महाराज का स्वरूप नहीं आता। फिर भी श्री राजजी महाराज की मेहर, जोश, निसबत और हुकम से उनके स्वरूप की पहचान हो सकती है।

मोहे दिलमें हुकमें यों कह्या, जो दिलमें आवे हक मुख।
तो खड़ा होए मुख रूह का, हकसों होए सनमुख।। २३ ।।

हुकम से मेरे दिल में यह आया कि यदि श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द मेरे दिल में आ जाए, तो मेरी परआतम का मुख भी श्री राजजी महाराज के सामने आ जाएगा।

अधुर हरवटी नासिका, दंत जुबां और गाल।
जो अंग आया हक का दिल में, उठे रूह अंग उसी मिसाल।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज के होंठ, हरवटी, नासिका, जबान, दांत और गाल जो अंग रूह के दिल में आ गया, वह अंग परआतम का जाग गया।

जो तूं ग्रहे हक नैन को, तो नजर खुले रूह नैन।
तब आसिक और मासूक के, होए नैन नैन से सैन।। २५ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के नेत्र दिल में आ गए तो रूह के नेत्र भी खुल जाएंगे। फिर आशिक माशूक श्री राजजी और मेरी परआतम नजर से बातें करने लगेंगी।

जो हक निलाट आवे दिलमें, और दिलमें आवे श्रवन।
दोऊ अंग खड़े होएं रूह के, जो होवें रूह मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज का मस्तक और कान दिल में आ जाते हैं तो रूह के भी दोनों अंग जागृत हो जाएंगे।

भौं भृकुटी पल नासिका, सुन्दर तिलक हमेस।
गौर सोभा मुख चौक की, क्यों कहूं जोत नूर केस।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज की भौंहे, भृकुटि, पलकें, नासिका हमेशा रहने वाला सुन्दर तिलक, मुखारबिन्द के गोरे रंग की शोभा और उनके सुन्दर घुंघराले नूरी बालों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

ए अंग जेते मैं कहे, आवें रूह के हिरदे हक।
तेते अंग रूह के, उठ खड़े होंए बेसक।। २८ ।।

जितने अंग मैंने श्री राजजी महाराज के बताए हैं, वह यदि रूह के दिल में आ जाएंगे तो रूह के भी वही अंग जागृत हो जाएंगे।

पाग बनी सिर सारंगी, इन जुबां कही न जाए।
ए जुगत जोत क्यों कहूं, जो हकें बांधी दिल ल्याए।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज के सिर पर सारंगी की तरह पाग बंधी है जो रूहों के अपने दिल की चाहना से बांधी है। उसकी जुगत का वर्णन इस जबान से कैसे करूं?

अतंत सोभा सुन्दर, चढ़ती चढ़ती तरफ चार।
जित देखूं तित अधिक, सोभा न आवे माहें सुमार।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की शोभा और सुन्दरता नित्य नौतन (नई) नजर आती है। चारों तरफ से जैसे भी देखूं अधिक शोभा दिखाई देती है, क्योंकि यह बेशुमार है।

हक हैड़ा हिरदे ग्रहिए, दिल में रहे दायम।
सो हैड़ा अंग रूह का, उठ खड़ा हुआ कायम।। ३१ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के दिल को अपने दिल में बसा लें तो परआतम का दिल भी जाग जाएगा।

जो हक अंग दिल में नहीं, सो अंग रूह का फरामोस।
जब हक अंग आया दिल में, सो रूह अंग आया माहें होस।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज का जो भी अंग रूह के दिल में नहीं आया रूह का वही अंग फराफोशी में रहा। जब श्री राजजी महाराज का वह अंग दिल में आ गया तो रूह के उस अंग से फरामोशी हट गई।

कटि पेट पांसे हक के, पीठ खभे कांध केस।
ए दिलमें जब दृढ़ हुए, तब रूह आया देखो आवेस।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज की कमर, पेट, पसलियां, पीठ, बाजू, कंधा, और बाल जब रूह के दिल में आ गए, तो रूह को आवेश आ जाएगा।

बाजू मच्छे कोनियां, कांड़े कलाइयां हाथ।
हक के अंग हिरदे आए, तब रूह खड़ी हुई हक साथ।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज के बाजू, भुजा, कोहनी, काड़ा, कलाई और हाथ जब रूह के दिल में आ गए, तो रूह की परआतम उठकर धनी के सामने खड़ी हो गई।

पोहोंचे हथेली अंगुरी नख, लीकें रंग सलूक।
हक अंग मिहीं हिरदे बैठे, अब निमख न होए रूह चूक।। ३५ ।।

हाथ का पोहोंचा, हथेली, उंगली, नख तथा हाथ की रेखाएं और सुन्दर शोभा जब रूह के दिल में आ जाती है तो एक क्षण के लिए भी रूह से भूल नहीं होती और उसके भी यह अंग जागृत हो जाते हैं।

Nijanand App

नख अंगूठे अंगुरियां, नीके ग्रहिए हक कदम।
सोई नख अंगुरियां पांउं रूह के, खड़े होत माहें दम।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों के नख, अगूंठे और उंगलियां जब रूह के दिल में आ जाते हैं तो एक पल में रूह के भी यही अंग खड़े हो जाते हैं।

जब हक चरन दिल दृढ़ धरे, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक अंग सब हिरदे आए, तब रूह जागे अंग परवान।। ३७ ।।

जब श्री राजजी महाराज के चरण दिल में आ जाते हैं तो रूह खड़ी हो जाती है। जब श्री राजजी महाराज के सभी अंग दिल में आ जाते हैं तो रूह पूरे रूप से जागृत हो जाती है।

मोहोरी चूड़ी इजार की, और नेफा इजार बंध।
हरे रंग बूटी कई नकस, हकें सोभित भली सनंध।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज की इजार की मोहोरी की चूड़ियां, नेफा, इजारबन्ध, हरे रंग की बूटियां और नक्शकारी अच्छी तरह से इजार में शोभा देती है।

क्यों कहूं जुगत जामें की, हरे पर उज्जल दावन।
निपट सोभित मिहीं बेलियां, झांईं उठत अति रोसन।। ३९ ।।

जामे की हकीकत कैसे बताऊं? हरी इजार पर सफेद जामा पहना है जिसमें सुन्दर बारीक बेलियां हैं। इजार की किरणों की झांई जामे में सुन्दर झलकती है।

एक सेत रंग जामा कह्या, माहें जवेर जुगत कई रंग।
इन जुबां रोसनी क्यों कहूं, जो झलकत अर्स के नंग।। ४० ।।

जामा सफेद रंग का कहा है जिसमें कई रंग के जवेर युक्ति से जड़े हैं। परमधाम के इन नगों की झलकार को यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

बीच पटुका कस्या कमरें, रंग कई बिध छेड़े किनार।
बेली नकस फूल केते कहूं, अवकास भर्‌यो झलकार।। ४१ ।।

कमर में पटका बंधा है, जिसके पल्लू और किनारों पर कई तरह के रंग और बनावट की बेलियां, नक्शकारी, फूल आकाश तक जगमगाती हैं।

एक झलकार मुख केहेत हों, माहें कई सलूकी सुखदाए।
सो गुन गरभित इन जुबां, रंग रोसन क्यों कहे जाए।। ४२ ।।

यह झलकार जो मैंने कही है, उसमें कई तरह की बनावटें सुख देने वाली हैं। वह कई तरह के रंग, रोशनी, कारीगरी से भरपूर हैं। उसका यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

जामा जुड़ बैठा अंग पर, कोई अचरज खूबी लेत।
सोभा सलूकी सुख क्यों कहूं, अंग गौर पर जामा सेत।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग पर जामा चिपककर बैठा है (टाइट-फिट है) जिसकी सुन्दरता अति अद्‌भुत है। श्री राजजी महाराज के गोरे अंग पर सफेद जामे की शोभा (सलूकी) और सुख का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

बगलों नकस केवड़े, कंठ बेली दोऊ गिरवान।
ए जुगत जुबां तो कहे, जो कछू होए इन मान।।४४।।

जामे की बगलों में केवड़े के फूल जैसी नक्शकारी है। गले में तथा दोनों तनियों पर बेलें बनी हैं जिनकी कोई उपमा नहीं है, इसलिए इस जुगत का यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

कटाव कोतकी कांध पीछे, ऊपर फुंदन हारों के।
रूह जो जाग्रत अर्स की, सुख लेसी बका इत ए।।४५।।

जामे में कंधे के पीछे कटाव पर जरी का काम है और उसके ऊपर गले में पहने हारों के फुंदन लटकते हैं। परमधाम की जो रूह जागृत हो जाती है यह अखण्ड सुख वही प्राप्त करती है।

बांहें चूड़ी और मोहोरियां, चूड़ी अचरज जुगत।
निपट मिहीं मोहोरीय से, चढ़ती चढ़ती सोभित।।४६।।

जामे की बांह की मोहरी की चुन्नटें बड़ी अजब ढंग की शोभा देती हैं। पहले बिलकुल बारीक, फिर ऊपरा ऊपर बढ़ती शोभा है।

आए वस्तर हिरदे हक के, रूह अपने पेहेने बनाए।
तेती खड़ी रूह होत है, जेता दिल में हक अंग आए।।४७।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्र जब रूह के दिल में आ गए तो रूह ने भी अपने वस्त्र धारण कर लिए, क्योंकि जितने ही अंग श्री राजजी महाराज के दिल में आते है, उतने ही अंग रूह के खड़े होते हैं।

पांच नंग माहें कलंगी, तामें तीन नंग ऊपर।
एक मध्य एक लगता, पांच रंग जोत बराबर।।४८।।

श्री राजजी महाराज की कलंगी में पांच तरह के नग शोभा देते हैं। इसमें तीन नग ऊपर, एक बीच में और एक पाग से लगता हुआ है। इन पांचों रंगों की किरणें बराबर उठती हैं।

ए जो कलंगी सिर पर, लटक रही सुखदाए।
जो भूखन रूह नजर भरे, तो जानों अरवा देवे उड़ाए।।४९।।

यह कलंगी सिर के ऊपर पाग में लटकती सुख देती है। श्री राजजी महाराज के जिन आभूषणों को रूह नजर भरकर देख लेती है, तो लगता है वह उसमें मग्न होकर अपनी अरवाह उड़ा देगी।

सात नंग माहें दुगदुगी, सो सातों जुदे जुदे रंग।
चढ़ती जोत आकास में, करत माहों माहें जंग।।५०।।

पाग की दुगदुगी में सात अलग-अलग नगों के रंग दिखाई देते हैं, जिनकी किरणें आकाश में आपस में टकराती हैं।

जो रस कलंगी दुगदुगी, सोई पाग को रस।
अंग रंग जोत बराबर, ए नंग रस नूर अर्स।।५१।।

कलंगी और दुगदुगी जैसी रस भरी है, पाग भी वैसी ही रस भरी है जो अंग के रंग के बराबर शोभा देती है। यह नग भी रस भरे परमधाम के नूरी अंग हैं।

Nijanand App

ए जो हिरदे आए हक भूखन, जाहेर स्यामाजी के जान।
कलंगी दुगदुगी राखड़ी, होत दोऊ परवान।।५२ ।।

श्री राजजी महाराज के आभूषण जब दिल में आ गए तो श्री श्यामाजी के आभूषण भी इसी तरह से आ गए समझना। श्री राजजी महाराज की कलंगी और दुगदुगी और श्री श्यामाजी की राखड़ी दोनों एक से एक सुन्दर दिखाई देते हैं।

दोऊ मुक्ताफल कान के, करड़े कंचन बीच लाल।
साड़ी किनार सेंथे पर, श्रवन पानड़ी झाल।।५३ ।।

दोनों कान के मोतियों के फूल सोने में जड़े हुए हैं। इनके बीच में लाल नग शोभा देता है। कानों में पान की बनावट की झाला (बड़ी बालियां) पहन रखी है। साड़ी की किनारी मांग से लगती हुई इसके ऊपर शोभा देती है।

हक अंग तो मुतलक मारत, पर भूखन लगें ज्यों भाल।
चितवन जुगल किसोर की, देत कदम नूरजमाल।।५४ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग रूह के अंग में निश्चित रूप से चुभते हैं, परन्तु आभूषणों की शोभा तो भाले के समान रूह के दिल में छेद करती है। ऐसे श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी की युगल जोड़ी का चितवन रूह हमेशा करती है। तभी श्री राजजी महाराज के चरण रूह को मिलते हैं, जो रूह का अर्श है।

मुख बीड़ी आरागें पान की, लाल सोभे अधुर तंबोल।
ए रूह दृष्टें जब देखिए, पट हिरदे देत सब खोल।।५५ ।।

श्री राजजी महाराज पान का बीड़ा आरोगते हैं। तब होठों की लालिमा के साथ पान की लालिमा अच्छी लगती है। यह शोभा रूह की नजर से जब देखें तो आत्मा के सब द्वार खुल जाते हैं।

कहूं केते भूखन कंठ के, तेज तेज में तेज।
आसमान जिमी के बीच में, हो गई रोसन रेजा-रेज।।५६ ।।

गले के आभूषण का कहां तक बयान करूं? उनके तेज से आसमान और जमीन के कण रेजारेज (जगमगा) हो रहे हैं।

हार कई जवेरन के, कहूं केते तिनके रंग।
कई लेहेरें माहें उठत, ए तो अर्स अजीम के नंग।।५७ ।।

श्री राजजी महाराज ने जवेरों (जवाहरातों) के कई हार पहने हैं। उनके कितने रंग बताएं? परमधाम के एक नग में कई तरंगें उठती हैं।

एक एक नंगमें कई रंग, रंग रंग में तरंग अपार।
तरंग तरंग किरने कई, हर किरने रंग न सुमार।।५८ ।।

एक नग में कई रंग और रंग रंग में कई तरंग, एक तरंग में कई किरणें और हर एक किरण में रंग बेशुमार हैं।

जामें चादर जुड़ रही, ढांपत नहीं झलकार।
गिनती जोत क्यों कर होए, नंग तेज ना रंग पार।।५९ ।।

जामे पर चादर है, जिससे जामे की झलकार दिखाई देती है। इनके नगों का तेज, रंग बेशुमार हैं। इनकी गिनती किस तरह से हो?

Nijanand App

ए रंग जोत किन विध कहूं, जो ले देखो अर्स सहूर।
सोभा रंग सलूकी सुख, देखो रूह की आंखों जहूर।। ६० ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से देखो तो इन रंगों की जोत कैसे कहूं? शोभा, सलूकी, रंग और सुख रूह की आंखों से ही देखे जा सकते हैं।

भूखन हक श्रवन के, और हक कण्ठ कई हार।
सोई कण्ठ श्रवन रूह के, साज खड़े सिनगार।। ६१ ।।

श्री राजजी महाराज के कानों के आभूषण तथा उनके गले के कई हार देखने से रूह के गले और कान के सिनगार सज जाते हैं।

सोभा जुगल किसोर की, दोऊ होत बराबर।
जो हिरदे सो बाहेर, दोऊ खड़े होत सरभर।। ६२ ।।

श्री राजश्यामाजी की युगल जोड़ी की शोभा एक सी है। जैसे अन्दर से वैसे ही बाहर। दोनों एक से नजर आते हैं।

बाजूबंध और पोहोंचियां, कड़े जवेर कंचन।
नंग रंग नाम केते कहूं, कही जाए न जरा रोसन।। ६३ ।।

बाजूबन्ध, पोहोंची, कड़ा, जवेर, सोना, कई तरह के नगों और रंगों के नाम कहां तक कहूं? इनकी थोड़ी भी शोभा कहना सम्भव नहीं है।

मुंदरियां दसों अंगुरियों, एक छोटी की न केहेवाए जोत।
अर्स जिमी आकास में, हो जात सबे उद्दोत।। ६४ ।।

दसों उंगलियों में मुंदरियां हैं जिनमें एक छोटी की भी जोत कहने में नहीं आती। इसकी जोत से परमधाम की जमीन और आकाश सब जगमगा रहे हैं।

हक के भूखन की क्यों कहूं, रंग नंग जोत सलूक।
आतम उठ खड़ी तब होवहीं, पेहेले जीव होए भूक भूक।। ६५ ।।

श्री राजजी के आभूषणों के रंग, नग, जोत और सलूकी कैसे कहूं? इनके अंग में आते ही आत्मा जागृत हो जाएगी। उसके पहले ही जीव के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे।

रूह भूखन हाथ के, हक भेले होत तैयार।
ए सोभा जुगल किसोर की, जुबां केहे न सके सुमार।। ६६ ।।

रूह के हाथ के आभूषण भी श्री राजजी के हाथ के आभूषणों के साथ ही सज जाते हैं। युगल किशोर की शोभा बेशुमार है, जिसका वर्णन कैसे करूं?

चारों जोड़े चरन भूखन, रंग चारों में उठें हजार।
ए बरनन जुबां तो करे, जो कछुए होए निरवार।। ६७ ।।

दोनों चरणों के चारों जोड़े आभूषणों (झांझरी, घुंघरी, कांबी, कड़ला) में हजारों नगों की तरंगें उठती हैं। यदि इसकी कोई सीमा हो तो यहां की जबान से वर्णन हो।

Nijanand App

वस्तर भूखन हक के, आए हिरदे ज्यों कर।
त्यों सोभा सहित आतमा, उठ खड़ी हुई बराबर।। ६८ ।।

श्री राजजी महाराज के आभूषण जैसे ही रूह के दिल में आए, वैसे ही शोभा सहित रूह की परआतम जागृत हो जाती है।

सुपने सूरत पूरन, रूह हिरदे आई सुभान।
तब निज सूरत रूह की, उठ बैठी परवान।। ६९ ।।

स्वप्न के तन में श्री राजजी महाराज के स्वरूप की शोभा रूह के दिल में जब आ गई तो रूह की परआतम उठ कर खड़ी हो जाएगी।

जब पूरन सरूप हक का, आए बैठा माहें दिल।
तब सोई अंग आतम के, उठ खड़े सब मिल।। ७० ।।

जब श्री राजजी महाराज का पूरा स्वरूप रूह के दिल में आ गया तब परआतम के सभी अंग जागृत होकर खड़े हो जाएंगे।

वस्तर भूखन सब अंगों, कण्ठ श्रवन हाथ पाए।
नख सिख सिनगार साज के, बैठे अर्स दिल में आए।। ७१ ।।

श्री राजजी महाराज के कण्ठ, हाथ. कान, पांव, नख से सिर तक पूरा सिनगार रूह के दिल में आकर बैठ जाता है।

जब बैठे हक दिल में, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक आए दिल अर्स में, रूह जागे के एही निसान।। ७२ ।।

तब समझना कि रूह की परआतम जागृत हो गई है। श्री राजजी महाराज का रूह के दिल में आना ही परआतम का जागना होता है।

हक के दिल का इस्क, रूह पैठ देखे दिल माहें।
तो हक इस्क सागर से, रूह निकस न सके क्यांहें।। ७३ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल का इश्क जब रूह के दिल में आ जाता है तो श्री राजजी महाराज का इश्क सागर के समान गहरा और गम्भीर हो जाता है। रूह उसमें से किसी तरह भी निकल नहीं पाती।

जो हक करें मेहेरबानगी, तो इन बिध होए हुकम।
एता बल रूह तब करे, जब उठाया चाहें खसम।। ७४ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर हो तभी उनके हुकम से रूह की ऐसी हालत होती है। रूह भी जागृत होने की शक्ति तब लगाए जब श्री राजजी महाराज उसे जागृत करना चाहें।

महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए।
रूह जागे का एह उद्दम, तो ले हुकम सिर चढ़ाए।। ७५ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी महाराज के हुकम से मोमिनों को कहते हैं कि रूह को जगाने का एक यही उपाय है। इसे श्री राजजी का हुकम समझकर सिर चढ़ाओ।

Nijanand App